22

ISSN : 0976-5778

वर्ष : 2018-19

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के धर्म-आध्यात्म और पर्यटन पर केन्द्रित

ईसुरी-22

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2019 अंक - 22 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी
कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्नल आर.एम. जोशी
कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. निवेदिता मैत्रा
प्रो. चंदा बेन

प्रधान संपादक

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव
(सचिव, बुन्देली पीठ)

सहायक संपादक

विवेकानंद उपाध्याय, मनीष कुमार

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : डॉ मशकूर अहमद

संपादक मण्डल

डॉ. हिमांशु कुमार
डॉ. अरविन्द कुमार
डॉ. अफरोज बेगम
डॉ. सत्य प्रकाश उपाध्याय
श्री सतीष कुमार
श्री विवेक विसारिया

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

धामोनी शरीफ : अनोखी दरगाह

डॉ. मशकूर अहमद*

सागर जिला मुख्यालय से सागर-टीकमगढ़ प्राचीन मार्ग पर 45 कि.मी. की दूरी पर तथा सागर-झाँसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर सागर से 25 कि.मी. बाँदरी तथा बाँदरी से दाँयी ओर 11 कि.मी. बहरोल और बहरोल से 15 कि.मी. की दूरी तय करके 'धामौनी' पहुँचा जा सकता है। धामौनी को पुराना सागर भी कहते हैं। यह मध्यकाल की एक महत्वपूर्ण रियासत रही है। आज 'धामौनी' अपने स्वर्णिम इतिहास को संजोए अपनी भव्यता की दास्तान हमें सुनाता है। प्राचीन दुर्ग के साथ यहाँ हजरत बालजती शाह की पाक दरगाह के प्रति सभी धर्मों सम्प्रदायों के लोगों की अगाध श्रद्धा है। धामौनी नगर उजड़ने के चार सौ वर्ष बाद भी हजरत बालजती शाह के मुकाम के प्रति बुन्देलखण्ड के लोगों की अपार श्रद्धा है। इसलिए धामोनी शरीफ मात्र एक स्थान, ग्राम, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक, पर्यटन महत्व की ही जगह नहीं है। धामोनी शरीफ आस्था, विश्वास, रूहानियत, मानवता, शान्तिप्रियता, इल्म-ओ- अदब का केन्द्र स्थल है। यहाँ सभी धर्मों, पन्थों, सम्प्रदायों के लोग जो अमीर हो या गरीब सभी अदब से सर झुकाते हैं। यहाँ आत्मा को शान्ति मिलती है, रूह को ताजगी मिलती है, बिगड़ी बात बन जाती है। जो भी इस दर पे आता है चैन पाता है और फैज-ए-आब होता है। इस आस्ताने आलिया को फैज-ओ-करम का चश्मा जारी है। यहाँ स्थित हजरत मोहम्मद इश्हाक शामी उर्फ ह. बालजती शाह की दरग़ाह पूरी दुनिया में अपने तरह की अकेली दरग़ाह है। इस दरग़ाह की खासियत यह है कि इसमें मजार या रोजा के स्थान पर केवल रेत है, इसी रेत को मजार के रूप में एकत्र कर इसी रेत के मजार पर चादर चढ़ाई जाती है। इसी रेत के ढेर पर अपने ग्यारह साथी बच्चों के साथ लुका-छिपी का खेल खेलते-खेलते हजरत बालजति शाह महज ग्यारह वर्ष की उम्र में इसी रेत के ढेर में परदा कर गये थे। हजरत बालजति शाह एक जिन्दा बली हैं जो अपने आस्ताने मुकाम पर हर वक्त मौजूद हैं। मुगल और ईरानी शैली में बनी विशाल गुम्बद के भीतर सतह पर केवल रेत ही रेत भरी है, यह रेत भी विशेष प्रकार की है जो सिर्फ धामोनी में ही देखने को मिलती है। इसलिए यह एक अनोखी दरग़ाह है।

धामोनी शरीफ की मुख्य दरग़ाह के बाँयी ओर बिल्कुल मुख्य गुम्बद से लगी हजरत बालजति शाह के मुरीद हजरत सैयद रहमत शाह उर्फ चम्पा वाले बाबा का मुकाम है, यहाँ पर सैकड़ों वर्ष पुराना एक विशाल चम्पा का वृक्ष लगा है। हजरत रहमत शाह बाबा की मोहर्रम की नौ एवं दस तारीख को बस स्टेंड, सागर से

*प्राचीन इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.) 470003

सवारी उठती है, इसे धामोनी की सवारी कहते हैं। यह सवारी पहले ह. मल्लू बाबा के सर 25-30 वर्ष आती रही, फिर मल्लू बाबा के इन्तकाल के बाद 11 वर्ष यह सवारी नहीं उठी। फिर, अभी दो-तीन वर्ष से मल्लू बाबा के पुत्र ह. जुबेर खान उर्फ साहिब के सर आने लगी। अब यह सवारी जुबेर खान के बस स्टेंड स्थित घर से उठती है। जिसमें बाबा सागर में गश्त करते हैं, और लोगों की मुसीबतें दूर करते हैं।

धामोनी आज वीरान बस्ती है और उसकी कुल जनसंख्या एक है। आज से 500 वर्ष पहले यह एक फलता-फूलता नगर था, जिसकी सरहदें 16 वर्ग कि.मी. में फैली थी। यहाँ एक मजबूत और अभेद्य दुर्ग था, महल थे, बड़े और भव्य भवन थे, सुन्दर उद्यान, विशाल सरोवर था, सुन्दर देवालय थे, मस्जिदें थी, भरे-पूरे भीड़ भरे बाजार थे, सुनते है यहाँ पर हाथियों का बाजार लगा करता था। मगर अब न महल है, न ही देवालय बचे हैं, न भव्य भवन है, न बाजार है, और न ही आबादी है। शेष हैं तो भवनों देवालयों आदि के अवशेष, हाँ यहाँ का किला जिसके दरवाजों और दीवारों ने कितने ही हमलों का सामना किया और अब भी खड़े हैं, यह बताने के लिये कि हमारा भी भव्य अतीत था गौरव था।

यह किला पन्द्रहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गौड़ राजा सूरत शाह ने तामीर कराया था। इसी समय ओरछा में बुन्देला नरेश महाराजा वीर सिंह का शासन था। बुन्देलों और गौड़ों में परस्पर बैर था इस कारण वीरसिंह ने धामोनी पर हमला किया और किला जीत लिया। महाराज वीर सिंह ने इस किले को सुदृढ़ किया और इस का विस्तार कराया। महाराज वीर सिंह के पुत्र जुझार सिंह ने किले के पीछे धसान नदी पर एक सुन्दर घाट बनवाया था जो आज जुझार घाट के नाम से जाना जाता है। किले से एक कि.मी. की दूरी पर एक विशाल सरोवर है जो तत्कालीन समय में नगर की जल आपूर्ति का प्रमुख साधन था। नगर और किले में अनेक बावड़ियाँ जो जल आपूर्ति करती थीं। किले के अन्दर एक बावड़ी तो अत्यन्त भव्य है। नगर में सैकड़ों मकानों के अवशेष है जिनकी पक्की तथा प्लास्टर युक्त दीवारें अपनी भव्यता बयान करती है। नगर के बीच अनेक देवालय है जिनमें शिव, वैष्णव और जैन मंदिर भी है।

यहाँ के भवनों देवालयों कब्रों को आक्रमणकारियों से क्षति पहुँची ही साथ समय के प्रभाव से भी ये स्मारक ध्वस्त हो रहे हैं। सर्वाधिक क्षति इन भवनों देवालयों और स्मारकों को अगर किसी ने पहुँचायी है तो वे है धनलोलुप व्यक्ति, जिन्होंने धन के लालच में इन स्मारकों को खोद डाला है।

धामोनी नगर कैसे वीरान हुआ इसका प्रमाणिक तथ्य तो आज तक नहीं मिल सके है। साक्ष्यों का नितान्त अभाव है किन्तु यह अटल सत्य है, कि धामोनी नगर 18 वीं श. के अन्त तक तो आबाद था। इस नगर के नष्ट होने में लगातार लूट, आक्रमण होना एक प्रमुख कारण हो सकता है;। गौड़, बुन्देला, मुस्लिम या अंग्रेज कोई भी सम्पूर्ण नगर नष्ट नहीं कर सकते क्योंकि नगर ही न होता और जनता नहीं होती तो वे शासन किस पर करते।

यहाँ धामोनी नगर वीरान होने में एक मुस्लिम सूफी संत की बद्दुआ (श्राप) की कहानियाँ प्रचलित होने के साथ-साथ सर्वमान्य भी हैं। हजरत सैय्यद मुहम्मद इश्हाक शामी रह. अलैह उर्फ बाबा बाल जती शाह के आस्ताना खादिम बाबा हज़रत मस्तान शाह के बारे में कहा जाता है कि धामोनी वीरान होने की बद्दुआ इन्हीं ने दी थी। जिला गजेटियर सागर में एन्था वली शाह का नाम मिलता है। चूंकि बाबा मस्तान शाह खुदा की इबादत में हमेशा मस्त रहते थे और इसी कारण हो सकता है कि बाबा एन्था वली शाह का उपनाम मस्तान शाह पड़ गया हो।

हज़रत सैय्यद मुहम्मद इश्हाक शामी रहमत उल्लाह अलैह की दरगाह का खादिम ही दरगाह की देख-भाल और शाम को चराग रोशन करता था। चराग

लिये तेल का इंतजाम बस्ती के लोग करते थे। ऐसा सामान्य में कहा सुना जाता है कि एक दिन हज़रत शाह रह.अलैह दरगाह के चराग के लिये तेल बस्ती में निकले और उन्होंने आवाज दी कि मन तेल दे दो। मन भर का मतलब होता है 40 सेर सेर : 950 ग्राम) लोगों ने सुना तो मना कर दिया, इस तेल कौन दे दे ? बाबा मस्तान शाह सारे नगर में से मिट्टी का एक चराग लिये यही सदा लगाते जगह-जगह लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया किसी ने पागल कहा किसी ने दीवाना कहा। अनेक व्यंग किये। कोई न समझ सका कि उनके हाथ में केवल एक मिट्टी का चराग है वे एक चिराग तेल मन की श्रृद्धा के अनुसार चाहते थे।

बाबा थक कर घर वापस लौट आये स्वभाव से जलाली (क्रोधी) थे। इस क्रोध में भी थे कि आज पूरी बस्ती में से एक चराग तेल बाबा बालजती की दरगाह को नहीं मिल सका। यहीं उन्होंने बद्दुआ की कि मेरे पीर की दरगाह पर अगर चराग न जलेगा। तो सारी बस्ती में भी नहीं जलेगा, धामोनी वीरान हो जायेगी''।

अब नगर वासियों को अहसास हुआ तो लोगों ने माफी माँगी, मिन्नतें की पर बाबा ने कहा अब कुछ नहीं हो सकता, ये तो हो कर रहेगा, पर जब मेरी कब्र का ताबीज जमीन के बराबर हो जायेगा तो धामोनी फिर से आबाद होगी।

हुआ भी यही कि एक आँधी आयी शहर वीरान हो गया। धामोनी में कुछ बचा तो हजरत सैय्यद मुहम्मद इश्हाक शामी रह. अलैह की दरगाह, मस्जिद और उनका खादिम। लगभग 200 वर्ष से धामोनी वीरान है; वहां कोई बस्ती नहीं है पर बाबा बाल जती शाह की दरगाह हमेशा रोशन रही, यहाँ हमेशा रौनक रही। बाबा सैयद इश्हाक शामी रह. अलैह की दरगाह पर हमेशा उर्स कायम होता रहा। ऐसे भंयकर वीराने में भी हमेशा बाबा के अकीदतमंद वहाँ पहुँचते रहे। हजारों-हजार आदमी बाबा के उर्स में आते और शामिल होते रहे। आज भी हर साल हजरत सैयद मुहम्मद इश्हाक शामी रह. अलैह का उर्स पूरी शानो-शौकत के साथ मनाया जाता है।

इस किताब में जो इतिहास, संस्मरण एवं घटनायें शामिल की गयी हैं की गयी हैं वे बुन्देलखण्ड और सागर जिले के इतिहास एवं साहित्य से सम्बन्धित है। इन ग्रंथों के अध्ययन एवं जन-सामान्य में प्रलचित कहानियाँ, घटनायें और उनकी स्मृति आधारित जानकारियाँ हैं और उनके अनुभव हैं। मैं इस किताब में प्रकाशित सभी तथ्यों का ऐतिहासिक दावा नहीं करता हूँ मेरा उद्देश्य प्राप्त जानकारियों को प्रकाश में लाना एवं प्रकाशित कराना है। जिससे इस महान ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन महत्व के स्थान की ओर जन-सामान्य एवं इतिहास, समाजशास्त्र एवं पुरातत्व विषय के विद्वानों का ध्यान आकर्षित हों। यह क्षेत्र प्रकाश में आये और उन्नति करे और इस प्राचीन स्थान के संबंध में आधुनिक अध्ययन हो। ❐

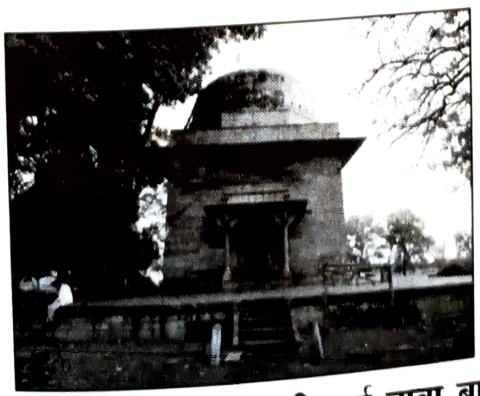

धामोनी दरगाह - हजरत मोहम्मद इश्हाक शामी उर्फ बाबा बालजती शाह का मुकाम